आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015–2017

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : तीसरा | जुलाई-2015

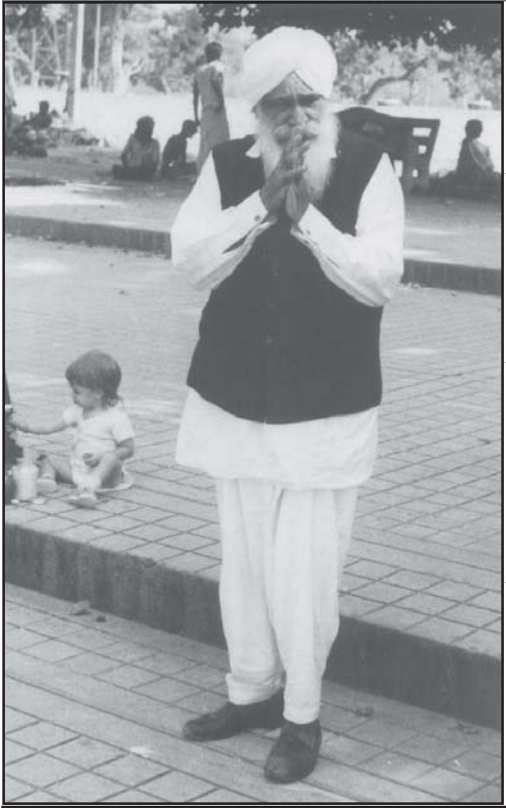

4
कौन कहे मैं मर जाणा है
(एक शब्द)

5
मौत का बाज
21 मार्च 1997 साँपला (हरियाणा)

15
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी
सन्त सहज सुख दाता
(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)

25
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के
मुखारविन्द से एक सन्देश
अनुशासन

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन- 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99(दिल्ली)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-099 28 92 53 04, 096 67 23 33 04
उप सम्पादिका : नंदिनी सहयोग : परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जुलाई 2015 -160- मूल्य – पाँच रुपये

कौन कहे मैं मर जाणा है

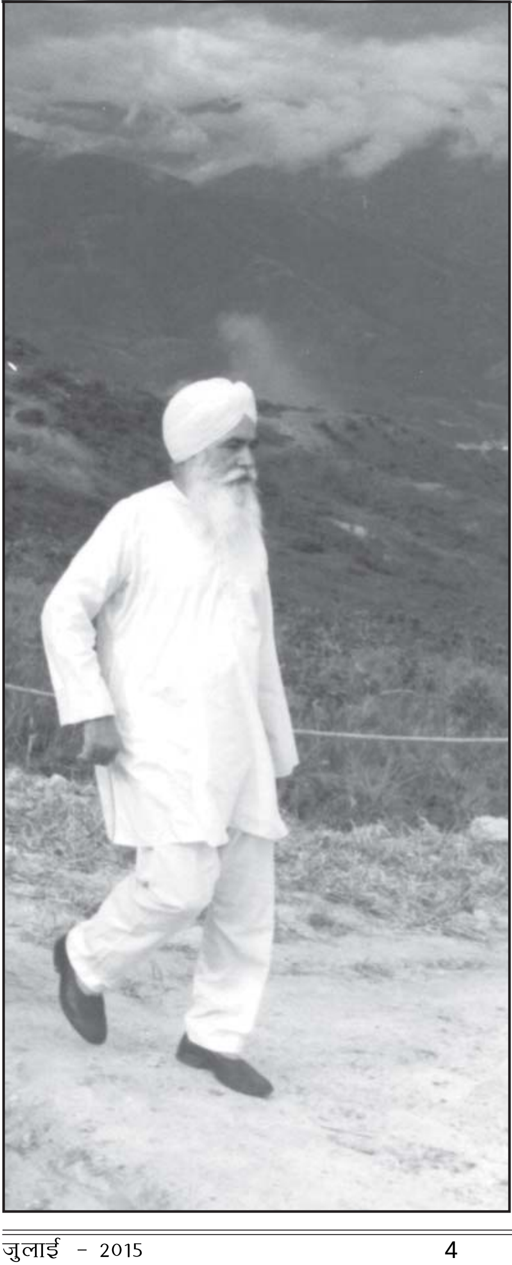

कौन कहे मैं मर जाणा है,
मैं तां कृपाल घर जाणा है,

लम्मां चौड़ा सागर जेहड़ा,
होले–होले तर जाणा है,

जीवन दी राह विच आई,
मौत मोई ने मर जाणा है,

जीवन दे नक्शे अंदर,
रंग सावन दा भर जाणा है,

वड्डी सारी उमरां भोगी,
रहना नहीं ऐं घर जाणा है,

कृपाल दी चर्चा होंणी है,
जा जीन्नां नाम जप जाणा है,

कोई मेरा राह ना रोके,
जाणा है सचमुच जाणा है,

तोरो मैनूं हसके तोरो,
अपने ही मैं घर जाणा है,

जद वी चाहेगा 'अजायब',
खाली पिंजर कर जाणा है,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

मौत का बाज

सांँपला (हरियाणा)

एक प्रेमीः- *प्यारे सन्त जी! अभी हाल में ऐसे संदेश आए हैं जिनके अंदर इस तरह का जिक्र है कि पता नहीं* ***मौत का बाज*** *हमें किस घड़ी ले जाए! इसे कई सेवकों ने इस तरह समझा है कि आप हमें जगाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि हम ज्यादा से ज्यादा अभ्यास करना शुरू कर दें और डायरियां रखकर अपने जीवन को सुधारें। कुछ प्रेमियों को चिन्ता हो गई है जो इसका मतलब ये समझते हैं कि आप जल्दी ही इस दुनिया से चले जाएंगे।*

इस बारे में पूरी दुनिया में अफवाहें फैलनी शुरू हो गई हैं। कुछ सेवक इस तरह की बातें करते हैं कि वे आपकी तकलीफ अपने ऊपर ले लें जिससे आप उस तकलीफ से मुक्त हो जाएं। आप हमें दया करके बताएंगे कि हमें इस बात को किस तरह समझना चाहिए?

बाबा जीः- हाँ भाई! बड़ा अच्छा सवाल है। सब सन्तों ने जिस भावना को आखों के आगे रखकर जाहिर किया है, मैं वही भावना जाहिर करता हूँ। प्यारे बच्चो! मैं आपको कोई नई बात बताने के लिए नहीं आया। गुरु तेगबहादुर जी कहते हैंः

बाल जवानी और वृद्धपन तीन अवस्था जान।
इनमें कोई साचो नहीं नानक सांची मान।।

बाल अवस्था चली जाती है जवानी आ जाती है। हम जवानी में सोचें कि हम बालक बन जाएंगे तो यह सिर्फ सोचना ही है बन नहीं सकते। इसी तरह अगर हम सोचें कि हम जवान ही रहेंगे, हम जवान नहीं रह सकते आखिर में बुढ़ापा भी आता है।

राम गयो रावण गयो जाकों बहो परिवार।
कहो नानक थिर कछु नहीं सुपने ज्यों संसार।।

ब्रह्म का अवतार राम नहीं रहा। वेदों-शास्त्रों ने रावण के बहुत बड़े परिवार का जिक्र किया है, रावण ने साईंस में बहुत तरक्की की थी वह भी नहीं रहा। जिस तरह रात को स्वपन आए तो सच प्रतीत होता है लेकिन जब आँख खुलती है तो कुछ भी नहीं होता; इसी तरह संसार में जीना भी एक स्वपन की तरह है।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''हम मूर्ख हैं हमने स्वपन के साथ मन लगाया है, स्वपन एक छलावा है। हम जो भी काम सारी जिंदगी करते हैं ये अपूर्ण हैं पूर्ण नहीं। परमात्मा के साथ मिलाप करना पूर्ण काम है लेकिन हम परमात्मा को भूल जाते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''जब पत्ता डाली से टूट जाता है पवन उसे उड़ाकर ले जाती है फिर वह पत्ता डाली के साथ नहीं लगता।'' कुछ लोग जनाजा लेकर जा रहे थे गुरु नानकदेव जी महाराज उसे देखकर हमें जगाते हैं:

जागो जागो सुत्तयो चलया बणजारा।

आप कहते हैं, ''जागो देखो! यह जा रहा है, आप लोग जागें।'' युधिष्ठिर ने यक्ष से पूछा, ''दुनिया में सबसे अदभुत चीज क्या है?'' यक्ष ने कहा, ''हम अपनी आँखों से लोगों को संसार छोड़कर जाते हुए देखते हैं और उन्हें अपने कंधो पर उठाकर पहुँचा भी आते हैं लेकिन हम उस वक्त को भूल जाते हैं कि शायद हमें मौत नहीं आएगी, हम सदा इस दुनिया में रहेंगे।'' सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं:

मैं जाणया दुख मुझको दुख सवाया जग।
ऊँचे चढ़के देखया घर घर ऐहो अग।।

आप कहते हैं, ''मैं सोचता था कि जन्म-मरण का दुख मुझे ही है। जब मैंने अपने सतगुरु के कहे मुताबिक सिमरन किया, तीसरे तिल पर एकाग्र हुआ आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचा फिर वहाँ से तरक्की करके भँवरगुफा सच्चखंड में गया तब मैंने देखा कि जन्म-मरण का कष्ट मुझे ही नहीं सारे संसार को लगा हुआ है। परमात्मा ही जन्म-मरण के कष्ट में नहीं आता।''

दरिया कन्ने बगुला बैठा केल करे।
केल करेन्दे हंज नूं अचन्तों बाज परे।
बाज पए तिस रब दे केलां विसरियां।
जो मन चित्त न चेत सहंसो गल्ली रब कीयां।।

बगुला दरिया के किनारे बैठकर बहुत चोज कर रहा था। वह कीड़े-मकोड़ो को पकड़कर कभी ऊपर फैंकता फिर उन्हें दबोच लेता था लेकिन बगुले को यह नहीं पता था कि **मौत का बाज** मुझे भी झपट्टा मार लेगा। जब मौत का बाज आया तो बगुला खेल भूल गया, **मौत का बाज** उसे बताकर नहीं आया अचानक ही आ गया।

प्यारेयो! हर आदमी दुनिया के सामान को याद करता है। मौत को कौन याद करता है? लेकिन मौत वक्त पर आकर मुँह दिखा देती है। हम मौत को याद करें या न करें मौत का देवता वक्त का पक्का होता है, यह किसी लालच या हुकूमत से नहीं टलता। वक्त पर आकर मुँह दिखा देता है।

दो दीवे बलेंदया मलक बैठा आए।
गढ़ लीता घट लुटया दीवणे गया बुझाए।।

मौत का देवता इस शरीर के ऊपर कब्जा कर लेता है। यह सिर्फ उसी आदमी को दिखाई देता है जिसे वह अंत समय में लेने के लिए आता है। आँखों की रोशनी खत्म कर देता है उसे लेकर

अपने साथ चला जाता है। हमारे ऊपर जान कुर्बान करने वाले मित्र, यार-दोस्त नजदीक ही बैठे होते हैं वे हमारी कोई मदद नहीं कर सकते। प्यारे मित्रों! वे ज्यादा से ज्यादा रो-धो ही सकते हैं।

हिन्दुस्तान में राजाओं के राज्य बहुत शक्तिशाली थे। मैंने अपनी जिंदगी में तीन राजाओं की मौत अपनी आँखों से देखी है। उनके आस-पास सैंकड़ो संतरी पहरा दे रहे थे लेकिन किसी संतरी को यह पता नहीं लगा कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और लेकर कहाँ गया? वे एक राख की मुट्ठी बन गए।

प्यारेयो! कपूरथला स्टेट को दुनिया का पेरिस कहा जाता था। हम वहाँ के राजा को थोड़ी देर में ही राख बनाकर आए थे। उस समय मैंने खुद रविदास का यह शब्द बोला थाः

जो दिन आवे सो दिन जाही, करना कूच रहन थिर नाहीं।

जो इंसान संसार में आया है वह एक दिन जरूर जाएगा। हम यहाँ सदा थिर रहने के लिए नहीं आए। हम दो-तीन साल पहले कुल्लू-मनाली से वापिस आ रहे थे। मैं गुरमेल को वे सारी जगह दिखा रहा था जहाँ मैं आर्मी के दौरान रहा था। मैंने वह स्कूल भी दिखाया जहाँ मैं पढ़ता था। वह कोठी आज भी वीरान पड़ी है वहाँ कोई रखवाला नहीं जहाँ वे राजा थे। कबीर साहब कहते हैंः

आसी पासी योद्धे खड़े सभी बजावें गाल।
मंज महल्लो लै गया ऐसा काल कराल।।

जब कोई बड़ा आदमी गुजर जाता है तो हम सलामियां करते हैं, श्रद्धांजलियां देते हैं, यह सब लोक दिखावा है। हमें पता नहीं काल भगवान उस आत्मा के साथ आगे उसके कर्मों के मुताबिक क्या कर रहा होता है?

मुझे मेरे गुरुदेव ने जातिय तौर पर कहा था कि हम यहाँ सदा रहने के लिए नहीं आए। जो वक्त बीत गया वह हाथ नहीं आएगा। आप भजन में भी पढ़ते हैंः

बीतया वेला हत्थ न आवे अजायब नू कृपाल समझावे।

मौत से वे लोग डरते हैं जिन्होंने मौत नहीं देखी होती अगर कोई उनके सामने मौत का नाम ले लेता है तो वे घबराते हैं कि मेरे सामने मौत का नाम मत ले। सन्त मरते नहीं वे अपने घर जाते हैं। शरीर जन्मता और मरता है लेकिन उनके अंदर जो ताकत काम करती है वह न जन्मती है न मरती है; न आती है न जाती है।

क्या आप समझते हैं परमात्मा सावन या कृपाल मर गए हैं? वे आज भी जीवित है इस जन्म से पहले भी जीवित थे और आगे भी उन्होंने जीवित रहना है। वे तो दुनिया में हजारों, लाखों को जिंदगी बख्शते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि वह परमात्मा नेहचल है अविनाशी है। जो अपनी आत्मा को परमात्मा में मिला लेते हैं वे भी नाश से रहित अविनाशी हो जाते हैं।

सन्त संसार में आकर हमारी सोई हुई आत्माओं को जगाते हैं। सभी सन्त कहते हैं, ''आप मुसाफिर हैं, सदा इस दुनिया में रहने के लिए नहीं आए। मोह की मीठी नींद से जागें आपको मौका मिला है, आप अपने काम भजन-सिमरन को पहल दें। हमारा काम भजन-सिमरन हैं।''

प्यारेयो! मैं आपको और भी बहुत सारे सन्तों की मिसालें दे सकता हूँ कि हर सन्त ने मौत का जिक्र किया है। उन्होंने यह भी कहा है कि पता नहीं मौत की घंटी कब और कहाँ बज जाए? सबसे पहले मैं उन लोगों का धन्यवादी हूँ जो लोग भविष्य वाणियां करते

हैं जिन्होंने मेरे साथ हमदर्दी दिखाई, जिन्होंने मेरी सेहत की चिन्ता की है। प्यारेयो! बच्चे भी ऐसी बात करने से पहले सोचते हैं क्या वे सदा थिर रह जाएंगे जो मेरे जाने की चिन्ता करते हैं? मौत ने झपट्टा उन्हें भी मारना है उन्हें तो यह भी पता नहीं कि उन्होंने सन्त से पहले जाना है या बाद में जाना है?

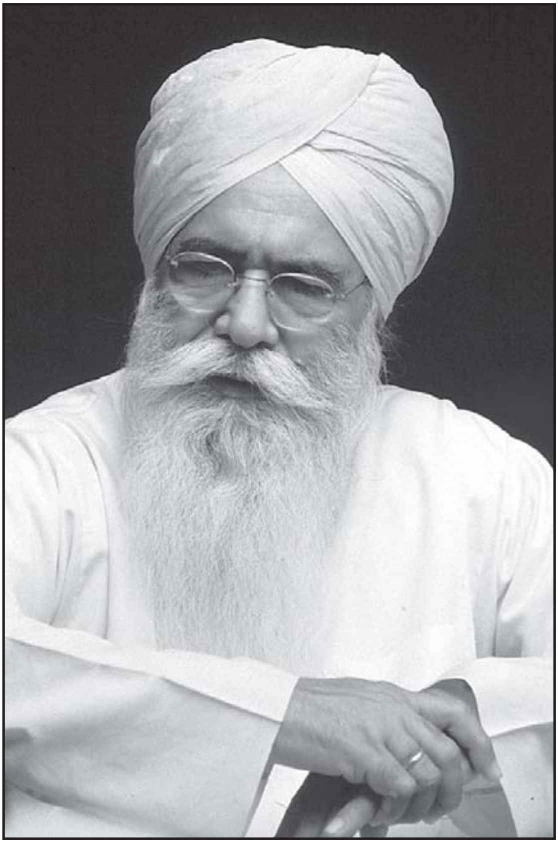

प्यारे बच्चो! सतसंगी अपना बोझ ही उठा ले तो बहुत है। जो लोग यह कहते हैं कि हम सन्त का बोझ उठा सकते हैं वे भूल में हैं। मैं वायदे से यह बात कहता हूँ कि ऐसे लोग मान-बड़ाई के भूखे होते हैं वे लोगों से वाह! वाह! करवाने के लिए ही ऐसा कहते हैं।

मैंने परमात्मा सावन-कृपाल की दया से उन्हे अंदर और बाहर परमात्मा रूप में देखा है लेकिन उन्होंने कभी भी ऐसी भविष्यवाणी नहीं की थी कि फलाना कब जाएगा और न अपने लिए कभी भविष्यवाणी की थी कि हम संसार से कब जाएंगे। महाराज सावन कहा करते थे, ''ओछे लोग भविष्यवाणियां करते हैं, हमें भविष्यवाणियों पर

ऐतबार नहीं करना चाहिए। भविष्यवाणी सच्ची नहीं होती यह सिर्फ वाह-वाह लूटने के लिए होती है।''

महाराज कृपाल ने कई मुल्कों में सतसंग दिए थे। मुझे घाना के बारे में पता है आप टूर पर घाना नहीं गए टूर बीच में ही छोड़कर वापिस आ गए लेकिन आपने भविष्यवाणी नहीं की कि मैं संसार छोड़ने लगा हूँ। मैंने बहुत से सतसंगों में बताया है कि सुख-दुख परमात्मा की तरफ से आता है। सन्त उसमें किन्तु-परन्तु नहीं करते। चाहे ऐक्सीडेंट होना है जिसमें उनका कितना भी नुकसान हो जाए वे वक्त को नहीं टालते, भविष्यवाणी नहीं करते। वे मालिक का भाणां मानते हैं। हमें दृढ़विश्वास दिलवाते हैं कि गुरु परमात्मा का भाणां मानता है, हमें गुरु का भाणां मानना चाहिए।

प्यारेयो! गुरु ऐसी भविष्यवाणियां नहीं करते। आपमें से बहुत से प्रेमी अंदर भी जाते हैं जिन्हें अटूट प्यार बख्शा हुआ है क्या वे जीवित रह जाएंगे? वे हौंके से ही अपना शरीर छोड़ जाएंगे। जब महाराज सावन ने शरीर छोड़ा उस समय कुछ लोगों को ऐसे तजुर्बे हुए थे। लगभग दो सौ प्रेमियों ने अपना शरीर छोड़ दिया, कोई कुएं में गिर गया और किसी ने दरिया में छलांग लगा ली।

महाराज कृपाल ने किसी को पता ही नहीं लगने दिया। ताई आपका खाना बनाती थी वह भी भूलेखे में ही रही कि अब आप तंदरूस्त हैं। संगत में सारे गीदड़ नहीं होते सूरमें भी होते हैं। संगत में सारे प्रेमी ऐसे नहीं कि आंखे बंद करते ही अंधेरा देखते हैं। प्यारे बच्चो! आपकी संगत में ऐसे भी प्रेमी हैं जो अंदर जाते है गुरु के साथ मिलाप करते हैं लेकिन ऐसे प्रेमी भविष्यवाणियां नहीं करते। सच तो यह है कि आप उनकी परख ही नहीं कर सकते।

उनके अंदर कमाल की नम्रता होती है। आप उन्हें पहचान भी नहीं सकेंगे कि ये वाक्य ही अंदर गुरु को प्रकट करते हैं।

प्यारे बच्चों! मैं जिसे 'नाम' देता हूँ उसे परमात्मा कृपाल की झोली में डाल देता हूं। मेरा भार परमात्मा सावन-कृपाल ही उठा सकते हैं। ऐसा कोई बंदा नहीं जो मेरा भार उठा सके अगर आप भजन-सिमरन करेंगे तो मुझे कम कर्म उठाने पड़ेंगे, मेरी सेहत जरूर अच्छी रहेगी।

आखिरी समय में महाराज सावन सिंह जी से पूछा गया कि आपकी जन्मपत्री में तो आपकी उम्र सौ साल लिखी है लेकिन आपने अभी से तैयारी कर ली है। महाराज सावन ने कहा, ''अगर आप लोग मुझे टिक कर काम करने देंगे, दुनियावी पत्र नहीं लिखेंगे तो मैं सौ साल पूरे कर जाऊँगा। आप जितना ज्यादा भजन करेंगे मैं आपके पास उतना ज्यादा समय बिताऊंगा।'' आप दस साल पहले ही चले गए। परमात्मा कृपाल संगत को भजन करने के लिए चेताते रहे कि आप उतनी देर तन को खुराक न दें जितनी देर आत्मा को खुराक नहीं दे लेते। महाराज कृपाल भी चौदह साल पहले ही चले गए।

मैं सवाल करने वाले का धन्यवादी हूँ उसने अच्छा किया पूछ लिया। किसी सन्त ने यह नहीं कहा कि इस दुनिया में सदा रहना है। सब सन्त यही कहते आए हैं कि हमने यह भरी दुनिया एक दिन छोड़ जानी है पता नहीं किस समय बुलावा आ जाए!

सुथरा एक लाधड़क फकीर हुआ है। वह गुरु हरगोबिंद के समय से लेकर गुरु गोबिंद सिंह जी के समय तक रहा है। वह बहुत कमाई वाला था, परमगति को प्राप्त था। उसकी हास्यरस की काफी कविताएं मिलती थी। सुथरा एक धर्मशाला में रूका, वहाँ

एक जोड़ा शादी करवाकर आया। दुनियादारी का रिवाज है कि हम ऐसी जगह पर जाकर मिठाई और कुछ रूपये मत्था टेकते हैं।

उस जोड़े ने सुथरे फकीर के आगे दो रूपये मत्था टेका और मिठाई दी। सुथरे ने रूपये मंदिर के पुजारी की तरफ कर दिए। मंदिर के पुजारी ने जोड़े से कहा, ''तुम चार युगों तक जीवित रहो।'' जब वह जोड़ा सुथरा फकीर से आशिर्वाद लेने लगा तो सुथरा फकीर ने लड़के से कहा, ''तूने मर जाना है और लड़की से कहा कि तूने भी मर जाना है।'' उन्होंने कहा, ''फकीरा! ऐसी बद्दुआ क्यों देता है?'' सुथरे ने कहा, ''मरना तो हर एक ने है। झूठ बोलने के लिए पुजारी है जो दो रूपये के लिए झूठ बोल रहा है।''

प्यारे बच्चो! जो भविष्यवाणियां करते हैं वे इस बात को भूल गए हैं कि हमने भी इस संसार से जाना है। एक दिन हर एक ने यहाँ से जाना है। मैं आपको यही कहता हूँ कि आप ऐसी भविष्य वाणियों पर ऐतबार न करें। विश्वास और प्यार से अपना भजन-सिमरन करें। मुझे जितना समय आपकी सेवा करने का मौका मिला है मैं खुश होकर आपकी सेवा कर रहा हूँ। मेरा यही होका है कि आप भजन-सिमरन ज्यादा करें।

मुझे बहुत अफसोस से कहना पड़ रहा है कि आश्रम में काफी लम्बी तार आई, जिसे गुरमेल ने पढ़ा। जिसका इनके दिल पर बहुत असर हुआ। मुझे इनको विश्वास दिलवाने में कई दिन लग गए कि ऐसी कोई बात नहीं। इन प्रेमियों का दिल दुखाया, सारी संगत के दिल पर काफी बुरा असर हुआ।

प्रेमियों को ऐसी भविष्यवाणियां नहीं करनी चाहिए। भजन-सिमरन करना चाहिए। कमरकसा कसकर ही रखना चाहिए जब आवाज आए तो उस समय चलने में ही फायदा है। *** 21 मार्च 1997

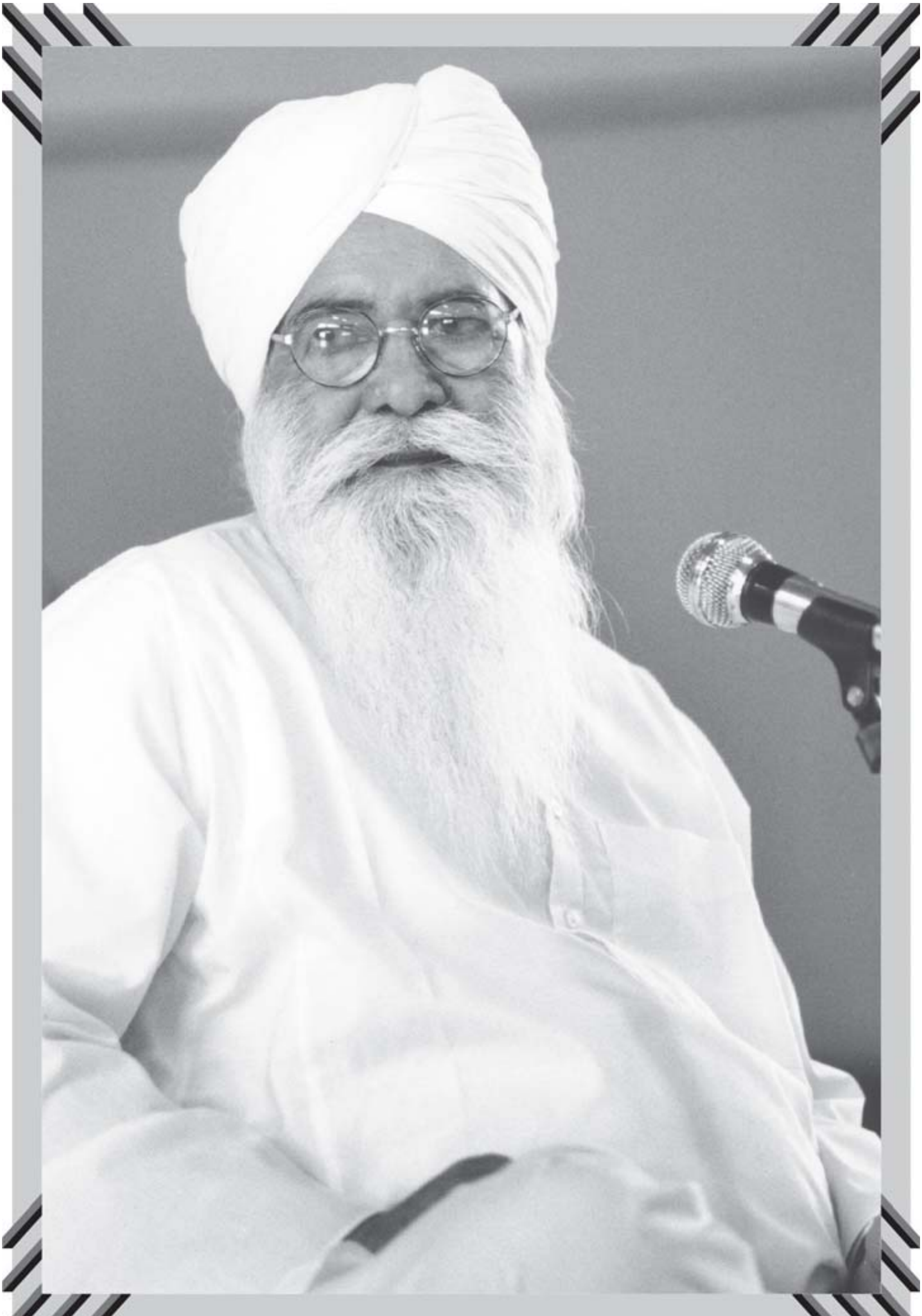

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सन्त सहज सुख दाता

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

घाना, साऊथ अफ्रीका

शाह कृपाल प्यारेया अटक जरा इक पल जावीं।
असी रोंदे खड़े नसीबां नू साडी सुन दर्दां दी गल्ल जावीं।।

परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जो शब्द-रूप होकर कण-कण में व्यापक है। उस ताकत का धन्यवाद लफ्ज़ो में नहीं किया जा सकता। सतगुरु का सच्चा धन्यवाद अंदर जाकर सच्चाई को देखकर ही किया जा सकता है।

सन्तों की कहानियां कागजी नहीं होती। उन्होंने उस कहानी के मुताबिक ही अपना जीवन ढ़ाला होता है। सन्त अपने प्यारे बच्चों को यही उपदेश देते हैं कि प्रभु परमात्मा को बातों से या पढ़-पढ़ाई करके प्राप्त नहीं किया जा सकता, यह करनी का मजबून है। परम सन्तों के वचन धर्मग्रन्थों में लिखे हैं हम उनके कहे अनुसार चलकर ही सच्चाई को अपनी आँखों से देख सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी यह कहानी सुनाया करते थे कि एक बादशाह जंगल में शिकार के लिए गया। उसके मुकाबले पर एक शेर आ गया। बादशाह अपनी जान बचाने के लिए एक पेड़ के ऊपर चढ़ गया। वह पेड़ के ऊपर बैठकर सोचने लगा कि मैं जिस टहनी पर बैठा हूँ क्या यह टहनी मजबूत है? अगर मैं नीचे गिर गया तो क्या नीचे जगह साफ है या ऊँची-नीची है? उसने टहनी की तरफ देखा कि उस टहनी को काला और सफेद दो चूहे काट रहे थे। जब उसने नीचे देखा तो नीचे साँप ने मुँह खोला हुआ था। अब बादशाह को टहनी का भी डर है कि यह टूट जाएगी अगर मैं नीचे गिर गया

तो साँप मुझे फौरन दबोच लेगा। बादशाह ने जब ऊपर निगाह मारी तो देखा वहाँ शहद लगा हुआ था। उस समय गर्मी का मौसम था शहद की एक-एक बूंद नीचे गिर रही थी। उसने मुँह ऊपर किया तो शहद मुँह में गिरने लगी। वह शहद में मस्त हो गया। वह टहनी, साँप और शेर का डर भूल गया।

प्यारेयो! यह एक कहानी है। सच्चाई यह है कि वह बादशाह हम हैं। सफेद और काला चूहा दिन-रात हैं। आज जो दिन चला गया है वह दिन कल नहीं आएगा। शेर वह यम है जो हमेशा हमारी ताक में रहता है। सर्प वह कब्र है जो मुँह फाड़े खड़ी है, वह सदा यही कहती है कि तू जल्दी मुझमें आ मैं तुझे दबोच लूं! शहद विषय-विकारों की चाट है हम इसमें मस्त होकर बैठे हैं। दिन-रात आरजा घट रही है हमें उसका डर नहीं। हम दिन-रात विषय-विकारों की चाट में लगकर अपनी मौत को भी भूल चुके हैं। सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं:

गौर निमाणी सद करे निगरयां घर आओ।
सरवर मैथों चलना मरना क्यों डराओ।।

जिस आत्मा पर परमात्मा दया-मेहर करता है उसके दिल के अंदर अपने मिलाप की चाह पैदा करता है। ऐसे जीव को संसार दुख रूप नजर आता है। वह संसार की असलियत को समझता है और ऐसे महात्मा की शरण में जाता है जिसने जीते जी मौत का मसला हल कर लिया हो। मौत से न कोई जपी बचा है न कोई तपी बचा है न कोई हठी या योगी ही बचा है। जो लोग परमात्मा की भक्ति करके, गुरु के बताए हुए उपदेश पर चलकर परमात्मा रूप हो गए हैं वे ही इस जालिम मौत के पंजे से बच सके हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

जन्म मरण दोऊं में नाहीं, जन पर उपकारी आए।

मालिक के प्यारे मौत-पैदाईश से ऊपर होते है। वे परमात्मा के हुक्म में आते हैं और परमात्मा के हुक्म का ही वरतारा करते हैं; जब परमात्मा बुलाता है तो वे चले जाते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जेल के अंदर कैदी कष्ट भोग रहे होते हैं, डाक्टर उनकी देखभाल के लिए जाता है लेकिन डाक्टर आजाद होता है।'' इसी तरह हम जीव तन के भी रोगी हैं और मन के भी रोगी हैं। हमारी आत्मा तन-मन का साथ लेकर रोगी हो चुकी है। सन्त-महात्मा इस रोग से ऊपर होते हैं वे संसार में आते हैं, संसार में रहते हैं लेकिन संसार के रोगों में ग्रस्त नहीं होते। सबसे बड़ा रोग काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

साध संग ओह दुष्ट वस होते।

हम इन पांचो डाकुओं से न विद्या पढ़कर बच सकते हैं न धन-दौलत से बच सकते हैं और न माता-पिता ही हमें इन डाकुओं से बचा सकते हैं। सिर्फ किसी सच्चे साधु की शरण में जाकर ही हम इन पांच डाकुओं से बच सकते हैं।

किसी सच्चे जिज्ञासु ने गुरु अर्जुनदेव जी के पास जाकर फरियाद की, ''परमात्मा से किस तरह मिला जा सकता है, परमात्मा से मिलने के क्या फायदे हैं? कृपा मुझे बताएं?'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज इस शब्द में उस सेवक को परमात्मा से मिलने का तरीका और परमात्मा से मिलने के फायदे बताते हैं। आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है:

किन बिध मिलै गुसाईं मेरे राम राय।।

जब तक जीव सन्तों के सतसंग में जाकर सन्तों की बताई हुई युक्ति के मुताबिक सुरत-शब्द का अभ्यास नहीं करता तब तक परमात्मा से मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। हमें देश या कौम बदलने की जरूरत नहीं, घर-बार छोड़कर जंगलों-पहाड़ों में जाने की जरूरत नहीं। कान फड़वाकर योगियों की तरह मुन्द्रा पहनने की जरूरत नहीं। तन के ऊपर भगवे या नीले कपड़े पहनने की जरूरत नहीं। बाल-बच्चे त्यागने की जरूरत नहीं। पति को पत्नी और पत्नी को पति त्यागने की जरूरत नहीं। सिर्फ दस नाखूनों से मेहनत करके अपना पेट पालने की जरूरत है। सन्त-सतगुरु हमें 'शब्द-नाम' का अभ्यास बताते हैं हमें ईमानदारी से भजन-अभ्यास करने की जरूरत है।

कोई ऐसा सन्त सहज सुख दाता मोहे मारग देय बताई ।।

आप कहते हैं, ''मुझे कोई ऐसा **सन्त सहज सुख दाता** मिल जाए जो मुझे परमात्मा के घर जाने का रास्ता बता दे क्योंकि सुख और शान्ति नाम में है। दुनिया की हुकूमत, धन दौलत में शान्ति नहीं। सोने की मीनाकारी वाले मंदिरों में शान्ति नहीं। दुनिया के विषय-विकारों में भी सुख-शान्ति नहीं। शान्ति सिर्फ नाम में है। नाम लफ्ज़ नहीं, ताकत है कण-कण में व्यापक है।''

सन्त नाम के भंडारी बनकर आते हैं। नाम जपकर नाम रूप हो जाते हैं। सन्त परमात्मा की तरफ से जीवों के लिए ऐसी वस्तु लेकर आते हैं जिसे हम धन-दौलत, हुकूमत से नहीं खरीद सकते। सन्त दाते बनकर आते हैं भिखारी बनकर नहीं आते। वे ऐसी अमोलक वस्तु का किसी से कोई मुआवजा नहीं मांगते अहसान तक भी नहीं करते बल्कि अहसास भी नहीं करवाते कि हमने आपको इतनी कीमती चीज़ दी है।

सन्त परोपकारी होते हैं दूसरे का दुख देखकर उनका दिल हिल जाता है, उनके अंदर रहम आता है। वे हर आत्मा के दुख की निवृति का उपाय करते हैं, ऐसे महात्मा ही सच्चे हितैषी होते हैं।

हमें सहज समाधि तब प्राप्त होती है जब हम सन्तों के बताए हुए सिमरन के जरिए फैले हुए ख्याल को दोनों आँखों के दरमियान तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं। जब हमारी सारी चेतन सतह तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाती है, हम स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर अंदर जाते हैं तब हमें सहज अवस्था प्राप्त हो जाती है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

गुरुमुख आए जाए निसंग।

हमें कोई ऐसा **सन्त सहज सुख दाता** मिल जाए जो हमें परमात्मा के घर जाने का रास्ता बता दे। सन्त रोज उस रास्ते से आते-जाते हैं। ऐसा नहीं कि सन्त हमें किताबों में से पढ़कर या सुना-सुनाया रास्ता बताते हैं। वे यह भी नहीं कहते कि आप अकेले अंदर जाएं बल्कि वे कहते हैं, ''आओ हम आपके साथ हैं।''

अंतर अलख न जाई लखया विच पड़दा हौमें पाई ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''यह संसार रोगी है। इस संसार में आकर न हमें इसकी सच्चाई का पता है और न हमें परमात्मा के बारे में ही ज्ञान है। हमारे अंदर हौ-मैं और मोह का पर्दा है। इस पर्दे की वजह से हम परमात्मा को नहीं देख सकते, संसार की असलियत को नहीं समझ सकते।''

आप प्यार से कहते हैं, ''धरती में हर जगह पानी मौजूद है कहीं पानी सौ फुट पर है तो कहीं इससे भी ज्यादा है। हम रोज धरती पर चलते-फिरते हैं लेकिन हम उस पानी से फायदा नहीं

उठा सकते। जब हम टयूबवेल लगवा लेते हैं, कुआँ खोद लेते हैं तो हमें उस पानी की सच्चाई का ज्ञान हो जाता है फिर हम उस पानी से प्यास बुझा लेते हैं और खेती का काम भी ले लेते हैं।''

इसी तरह वह अलख परमात्मा हम सबके अंदर है लेकिन हमें यकीन नहीं कि परमात्मा हमारे अंदर है, हम उससे कैसे मिल सकते हैं? ग्रंथी या पुजारी लोग दिन-रात ग्रंथ-पोथियों में से परमात्मा के गीत गा-गाकर लोगों को सुनाते हैं। जो ग्रंथ कहते हैं उसे वे खुद नहीं करते; कथनी कथते हैं करनी नहीं करते। लोगों को उपदेश देते हैं खुद दिन-रात झूठ बोलते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

मैं पूछूँ तुमसे ऐसे, तुम साध कहावत कैसे।

मैं आपसे सवाल करता हूँ कि साधना साधकर पारब्रह्म में पहुँचकर साधु बनता है। आप वहाँ तो पहुँचे नहीं, साधना साधी नहीं, काम, क्रोध छोड़ा नहीं फिर अपना नाम साधु-सन्त किस तरह रखवाते हैं? गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

साधना साध जन नीके जिन अंतर नाम धरीजे।
परसन परस भए साधु जन जन हर भगवान दखीजे।।

साधु वही है जिसने साधना करके अंदर नाम को प्रकट कर लिया हो, नाम रूप हो गया हो। कोई ऐसा सन्त मिले जिसके मिलने से परमात्मा गुरु याद आए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सच्ची बैठक तिन्हां संग जिन संग जपिए नाओ।
तिन सतसंग न कीचे नानक जिन्हां अपना स्वाओ।।

माया मोह सभो जग सोया ऐह भरम कहो क्यों जाई।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी जिज्ञासु के सवाल का जवाब दे रहे हैं, ''सारी दुनिया मोह-माया के भ्रम में सोई हुई है। क्या हमें किसी

ऐसे सन्त की तलाश नहीं जो परमात्मा रूप, नाम रूप हो चुका हो, किस तरह हमारे अंदर से भ्रम और मोह की मीठी नींद जाएगी?''

एका संगत इकत गृह बसते मिल बात न करते भाई ।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''औरत-मर्द दोनों को एक ही सेज पर सोए हुए युग बीत गए हैं। न औरत ने पति को देखा न मिलाप किया न वह सुहागन हुई। आत्मा भी शरीर के अंदर है और परमात्मा भी शरीर के अंदर है दोनों इकट्ठे रहते हैं लेकिन आत्मा ने परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया और न यह सुहागन हुई; दोनों इकट्ठे रहते हैं लेकिन मिलकर बात नहीं करते।''

एक बस्त बिन पंच दुहेले ओह बस्त अगोचर ठाई ।।

आप कहते हैं, ''हमें पता नहीं हम दिन-रात लुटे जा रहे हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार दिन-रात हमारी पूंजी लूट रहे हैं। हम पढ़े-लिखे भी हैं भाषणकार भी बन जाते हैं लेकिन हमें तब तक इस पूंजी का ज्ञान नहीं होता जब तक हम पूरे सन्त-सतगुरु के बताए हुए मार्ग पर नहीं चलते।'' कबीर साहब कहते हैं:

पोथी आखे पंडिता मैनूं न फरोल।
मेरे वस दी गल्ल नहीं कुंजी सतगुरु कोल।।

जिसका गृह तिन दीआ ताला कुंजी गुरु सौंपाई ।।

गुरु अर्जुनदेव जी प्यार से समझाते हैं, ''जिस परमात्मा ने यह शरीर पैदा किया है वह 'शब्द-रूप' होकर बड़ी युक्ति से मजबूत वज्र किवाड़ लगाकर इस शरीर के अंदर बैठ गया है। इसकी चाबी पूरे महात्मा के पास रखी है। चाबी वाले महात्मा सदा ही संसार में आते रहते हैं। परमात्मा रहम का समुद्र हैं वह सदा ही अपनी आत्मा पर रहम करके अपने प्यारे बच्चे को संसार में भेजता है।''

गुरु रामदास जी महाराज बड़े प्यार से कहते हैं, ‘‘बेशक साईंस ने कितनी ही तरक्की कर ली है लेकिन कोई इंसान इस शरीर की रचना नहीं कर सकता। परमात्मा ने पांच तत्व का पुतला इंसान बनाया है। एक तत्व दूसरे तत्व का विरोधी है लेकिन ये पांचों तत्व इकट्ठे काम करते हैं। कोई चार तत्व या छह तत्व का इंसान नहीं बना सकता।’’ स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जीव अचेत न चेते भाई, घर सुख छड़ वन वन भटकाई।
जाके घर सुख का भंडारा, सो क्यों भरमे दर दर मारा।।

जीव सोया हुआ है। सारे सुखों का भंडार इसके घर के अंदर है लेकिन यह उन सुखों को अंदर ढूंढने की बजाय बाहर वनों, पर्वतों, नदियों और मंदिर-मस्जिदों में ढूंढता है।

राधा स्वामी कहत सुनाई, कर सतसंग बूझ न पाई।
सतसंग बिना बूझ न पाई, भाग बड़े सतसंग तब पाई।।

बेशक हम दिन-रात तड़पते फिरें भाग्य के बिना सतसंग नहीं मिलता। सन्त-महात्मा जिसे सतसंग कहते हैं वह सतसंग मिलना बहुत मुश्किल है। जब तक हमें यह पता न लगे कि सन्तों की बानी में सतसंग किसे कहा गया है? दुनिया की भीड़-भाड़ को सतसंग नहीं कहा गया। सतसंग उसे कहा गया है जहाँ कोई कमाई वाला महात्मा सतसंग करता है। ऐसे कमाई वाले महात्मा की संगत में जाकर हमें लाभ ही लाभ है।

जहाँ एक मजहब दूसरे मजहब को गालियां निकालता है या गुजरे हुए राजा-महाराजाओ की कथा कहानियां सुनाई जाती हैं उसे सतसंग नहीं कहते। महात्मा के सतसंग में शब्द-रूप गुरु की महिमा की जाती है, परमात्मा की महिमा गाई जाती है ताकि भूले हुए जीवों के अंदर नाम जपने का शौक, विरह और तड़प पैदा हो।

अनिक उपाव करे नहीं पावै बिन सतगुर शरणाई ।।

आप कहते हैं, ''हम जब तक किसी कुंजी वाले महात्मा के पास जाकर 'शब्द-नाम' का भेद नहीं ले लेते तब तक हम मन-बुद्धि से जप-तप, पूजा-पाठ, हठ योग करके शरीर को कितने भी कष्ट क्यों न दे लें! चाहे जितने मर्जी उपाय कर लें परमात्मा को नहीं पा सकते, शान्ति हासिल नहीं कर सकते।''

जिन के बंधन काटे सतगुरु तिन साध संगत लिव लाई ।।

बंधन बहुत हैं लेकिन परमात्मा हमारे बंधन काटता है ।लोक-लाज का बंधन है, यार-दोस्त ताने-मेहणे देते हैं कि तू पढ़ा-लिखा होकर साधु-सन्तों के पीछे फिरता है! सन्तमत में एम.ए. पास को भी चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है क्योंकि यह पढ़-पढ़ाई का मसला नहीं।

महाराज कृपाल बहुत पढ़े-लिखे थे। आप सदा ही कहते थे, ''किताबें लिख लेना मन-बुद्धि का काम है लेकिन रूहानियत वहाँ से शुरू होती है जहाँ मन-बुद्धि समाप्त हो जाते हैं।''

सतसंग के जरिए सन्त हमारे बंधन काट देते हैं। वे हमें प्यार से समझाते हैं कि दुनिया की बड़ाई और ताने-मेहणे हमारे साथ नहीं जाएंगे। दुनिया छोटी है परमात्मा बड़ा है। परमात्मा से मिलाप करने के लिए, अपने घर सच्चखंड जाने के लिए दुनिया की बड़ी से बड़ी कुर्बानी भी छोटी है।

पंच जना मिल मंगल गाया हर नानक भेद न भाई ।।

संगत में जाकर हमारी लिव लग जाती है, ख्याल परमात्मा के साथ जुड़ जाता है। हम सारे ही परमात्मा के गुण गाते हैंः

गोबिंद गोबिंद कहिए दिन राती, गुण गोबिंद शब्द सुणावड़या।।

जब हम 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तब परमात्मा और हममें कोई फर्क नहीं रहता क्योंकि हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है। जब आत्मा परमात्मा के साथ मिल जाती है तो यह भी परमात्मा हो जाती है। संगत में जाकर ही हमारे अंदर नाम जपने का शौक, विरह-तड़प पैदा होती है। सतसंग में जाकर ही हमें अपनी गलतियों का पता लगता है।

मेरे राम राय इन बिध मिलै गुसाईं।।
सहज भया भ्रम खिन मह नाठा मिल जोती जोत समाई।।

गुरु अर्जुनदेव जी ने इस शब्द में बहुत प्यार से बताया है कि कोई ऐसा **सन्त सहज सुख दाता** मिल जाए जो हमें परमात्मा के घर जाने वाली सड़क पर डाल दे। हमारे अंदर जो वज्र किवाड़ लगे हैं उन्हें खोल दे। परमात्मा बंधन तोड़कर ऐसे महात्मा की संगत में लाता है। सन्त-महात्मा हमारे सामाजिक बंधन तोड़कर समझाते हैं कि दुनिया छोटी है परमात्मा बड़ा है।

प्यारेयो! न घर-बार, न बेटे-बेटी छोड़ने की जरूरत है न समाज बदलने की जरूरत है सिर्फ ऐसे महात्मा की सोहबत-संगत करने की जरूरत है जहाँ जाकर हम परमात्मा की भक्ति कर सकें, परमात्मा को याद कर सकें। परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है, हम उसे अंदर ही मिल सकते हैं। आज तक बाहर से न किसी को परमात्मा मिला है न मिल ही सकता है।

DVD No - 567

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से एक सन्देश

अनुशासन

हम उन महान हस्तियों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अपनी अपार दया करके हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया। हममें यह हिम्मत नहीं थी कि हम अपने घर-बार की सख्त जंजीरो को ढ़ीला करके परमात्मा सावन-कृपाल की याद में बैठ सकते, यह भी उन महान आत्माओं की दया है।

कल सतसंग में बताया गया था कि गुरु से मिले बिना प्यार नहीं जागता, हमारा प्यार सोया हुआ है। वे हमेशा प्यार देते हैं सवाल हमारे समझने का है कि हम उनके प्यार और उनकी हमदर्दी को समझ सकें, उनकी हमदर्दी से कोई फायदा उठा सकें।

कबीर साहब कहते हैं, ''पेड़ अपने फायदे के लिए पैदा नहीं होता वह संसार को फल देने के लिए पैदा होता है। चाहे कोई पेड़ को पत्थर मारे फिर भी वह खाने के लिए मीठा फल देता है इसी तरह नदी संसार के फायदे के लिए बह रही है। पशु, पक्षी, इंसान नदी का पानी पीते हैं, हम नदी से अन्न पैदा करते हैं इसी तरह बारिश दुनिया के फायदे के लिए बरसती है।''

सन्त भी संसार में दुनिया के फायदे के लिए आते हैं, उन्होंने सदा के लिए अपना फायदा कर लिया होता है। वे संसार में अपनी कोई गर्ज लेकर नहीं आते। परमात्मा ने उनकी ड्यूटी लगाई होती है कि भूली हुई आत्माओं को समझाकर ले आओ। सन्तों का दया करने का अपना-अपना तरीका होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों के पास अनेक प्रकार की शिक्षा होती है। जिस तरह कोई भक्ति में लगता

है वे उसी तरह उसे प्यार से भक्ति में लगा लेते हैं।'' सतसंग में महाराज सावन एक खास वाक कहा करते थे कि जो लोग यह कहते हैं कि हम सतसंग में जाते हैं वे अंधे हैं, जब आंख खुल जाती है फिर उन्हें पता लगता है कि हम सतसंग में नहीं जाते कोई हमें सतसंग में लेकर जाता है, खींचता है। हम यह कहते हैं कि हम घंटा दो घंटे भजन में बैठते हैं जब आँख खुलती है तो पता लगता है कि हम बैठते हैं या कोई हमें बिठाता है।

मैंने सारे संसार में यह बात दावे से कही है कि गुरुमत, सन्तमत परियों की कहानी नहीं यह एक सच्चाई है। आज तक जिसने कमाई की गुरुओं की हिदायत के मुताबिक अपना जीवन ढ़ाला अंदर जाकर सच्चाई को खुद आँखों से देखा वे कह नहीं सके कि यह परियों की कहानी है। उन्होंने दूसरे लोगों को सच्चाई बयान की कि जो कुछ अंदर है उसकी महिमा अपरम्पार है जिसे बयान नहीं किया जा सकता। जो अंदर चला जाता है उसकी जुबान गूंगी हो जाती है, आँखों में सब्र आ जाता है और आत्मा प्यार से गद्-गद् हो जाती है। इसी तरह उन्होंने हमारे ऊपर दया करके हमें अपना प्यार बख्शा।

महाराज सावन सिंह जी बहुत धड़ल्ले से यह लफ्ज़ कहा करते थे, ''प्यारेयो! अगर सतसंगी मजबूत है सतसंग में जाता है गुरु मजबूत है और गुरु ने यह इरादा बनाया है कि मैं इसे इस जन्म के बाद दूसरा जन्म न दूं। जिस तरह हवाई जहाज सवारियों को लेकर उड़ जाता है इसी तरह मैं इन्हें लेकर चला जाऊं।''

काल एक ऐसी ताकत है जो नहीं चाहती कि किसी भी तरह जीव मेरे फंदे को तोड़ जाएं। सन्तों की रूह को काल कोई सजा नहीं दे सकता, जन्म-मरण के कष्ट में नहीं डाल सकता क्योंकि

उसके सिर पर पूरा गुरु है। काल जीव को तन-मन के पिंजरे में उलझाकर कैद कर सकता है, समस्याएं खड़ी कर देता है फिर हम उसके कहे अनुसार चलने लगते हैं। जब किसी तरह काल का दाँव नहीं चलता तो वह सतसंगियों के मन के अंदर बैठ जाता है। मन एक-दूसरे सतसंगी को अलग कर देता है अगर सतसंग में आपका प्यार-मोहब्बत नहीं होगा तो आपके अंदर किस तरह श्रद्धा आएगी!

गुरु की ड्यूटी है कि दूर-नज़दीक कितनी भी आत्माएं हों उन्हें 'नाम' के साथ जोड़ना, नाम की कमाई का भेद बताना उन्हें अपना प्यार देकर प्रभु के प्यार में जगा देना। सतंसगी की भी जिम्मेवारी है अगर वह समझे। कई बच्चे इस जिम्मेवारी को समझते हैं कि मेरा पिता जो व्यापार करता है मैं भी उस व्यापार में अपने पिता की मदद करूं और जिम्मेवारी से व्यापार को चलाऊं।

इसी तरह अगर सन्तों के सतसंगी निगाह मारते हैं कि गुरुदेव हमारी जिंदगी बनाने में लगे हुए हैं तो सतसंगी मजबूत हो जाएंगे आपस में प्यार बनाएंगे। सतसंग को कामयाब करने के लिए **अनुशासन** बहुत जरूरी होता है। बाबा जयमल सिंह जी महाराज, सावन सिंह जी महाराज व कृपाल सिंह जी आर्मी में गए और इस गरीब आत्मा को भी आर्मी में जाने का मौका मिला। आर्मी में हुक्म मानने की आदत डाली जाती है।

मैं बताया करता हूँ कि आर्मी में इस किस्म के हुक्म दिए जाते हैं कि खाना तैयार करें। लकड़ी और राशन कहाँ से मिलेगा इसकी रिपोर्ट बाद में करें। आर्मी से आदत बनी कि हुक्म मानना कितना जरूरी है? हम दुनियावी लोगों को खुश करने के लिए उनका हुक्म बजाते हैं, रातों को जागते हैं मेहनत करते हैं लेकिन गुरु का हुक्म कम दर्जे से मानते हैं। कोई भाग्यशाली ही गुरु के हुक्म को मानता

है। आप देखें! किस तरह आर्मी के लोग एक-दूसरे के पीछे से निकल जाते हैं कान तक नहीं खुजलाते।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''परमात्मा इंसान की तलाश में है कोई इंसान बने।'' आप इंसान बनकर देखें! भगवान इंसान के पीछे-पीछे फिरता है। महाराज सावन सिंह जी को बाबा जयमल सिंह जी ने खोजा। महाराज कृपाल को बाबा सावन सिंह जी ने खोजा। मैं खुद जमीन में बैठा था मुझे कौन जानता था? उस शहन्शाह कुलमालिक कृपाल ने मेरे घर आकर मुझे खोजा। महाराज कृपाल ने कहा, ''प्यारेया! यह काम करना है, मैं ही तेरे पास आऊँगा।'' सन्त जो कहते हैं सही कहते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि मैं संसार में यही कहता हूँ कि मेरा अपना कोई मिशन नहीं। मैं कोई मिशन लेकर नहीं आया, मिशन सावन-कृपाल का है। मैं सारी जिंदगी प्यार का पुजारी रहा, मेरा गुरुदेव प्यार का समुद्र था। मुझे विरासत में प्यार मिला है और मैं वही प्यार आपके साथ बाँटने के लिए आया हूँ।

सन्त आकर हमारे अंदर प्यार पैदा करते हैं लेकिन हमारा मन अंदर से सतसंगियों को अलग-अलग कर देता है। काल के पास बहुत दाँव हैं। जब हम एक-दूसरे की नुक्ता-चीनी करते हैं तो वहाँ भजन कहाँ रहा? स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''गुरु डांटता है सतसंगी रोते हैं।'' हम सतसंगियों का आपस में ज्यादा से ज्यादा प्यार होना चाहिए क्योंकि हम कोई समाज नहीं चला रहे होते, हम समाजों से ऊपर होते हैं। समाजों में हमें यह नहीं बताया जाता कि किसी की निन्दा करना या किसी के साथ घृणा करना बुरा है। सन्तों का उपदेश यही है कि सब आपस में मिलकर बैठें। गुरु साहब कहते हैः

होय एकत्र मिलो मेरे भाई दुविधा दूर करो लिव लाई।
हर नामें की होवो जोड़ी गुरमुख बैठो सफा बिछाई।।

हुजूर कृपाल ने दुनिया के हर इंसान को परमात्मा की याद में इकट्ठे होकर बैठने के लिए कहा है। मैंने यह सतसंग सन्तबानी आश्रम अमेरिका में भी दिया था कि काल किस तरह सतसंगियों को परेशान करता है, उनका भजन-सिमरन लूट लेता है। भजन-सिमरन छूट जाता है फिर हम एक-दूसरे की निन्दा-चुगली, नुक्ता-चीनी में लग जाते हैं। सन्त सिखाते हैं कि आप प्यार-मौहब्बत करें इकट्ठे होकर बैठें इसमें आपका फायदा है। आप करके देखें! सन्त हमें जो हुक्म देते हैं उन्होंने खुद उस हुक्म की पालना की होती है, **अनुशासन** बहुत जरूरी है।

पच्चीस-तीस साल से जो लोग मेरे आस-पास रह रहे हैं उनमें से कोई खड़ा होकर यह नहीं कह सकता कि मैंने कभी खाने की निन्दा की हो या मैं काफी देर तक सोता रहा या सुबह किसी ने मुझे सोता हुआ देखा हो या मेरी लड़की ने मेरा बिस्तर इकट्ठा किया हो क्योंकि मैं **अनुशासन** में हूँ। हमें आर्मी में यह सिखाया जाता था कि सुबह उठकर अपना बिस्तर खुद इकट्ठा करें। आर्मी में यह हुक्म था अगर शहर जाना है तो पास लेकर जाएं।

मैं यहाँ खेत में एक तरफ बैठकर अभ्यास किया करता था। दिल में ख्याल आया कि हम यहाँ मालिक का हुक्म मानते हैं तो क्या गुरु का हुक्म एक मामूली अफसर जितना भी नहीं? हम सोचते हैं कि गुरु तो किसी और तरफ बैठा है ऐसी बात नहीं। गुरु आपके नजदीक आपके अंदर बैठा है। आप सबसे पहले अनुशासन की आदत बनाएं। **अनुशासन** होगा तो मकान की नींव मजबूत होगी अनुशासन नहीं होगा तो हम किस तरह तरक्की कर सकते हैं?

जब गुरु गोबिंद सिंह जी रोपड़ के इलाके में गए तो आपने उन लोगों को **अनुशासन** के बारे में समझाया कि आपके पास जीवन को सुधारने का क्या तरीका है और आप लोग क्या काम करते हैं? उन लोगों ने बताया कि हम चोरी-डाके मारते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''प्यारेयो! तुम इन कर्मों का लेखा कैसे दोगे?'' उन लोगों ने कहा कि हम पढ़े-लिखे नहीं हम किस तरह लेखा दे सकते हैं? गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''जब आपसे पाप हो जाए तो आप एक कंकर एक तरफ रख दें और शाम को गिनें कि आपने कितने पाप किए, कितनी बार किसी का बुरा किया?''

इस तरह उन सबके कंकरों के बड़े-बड़े ढ़ेर हो गए। सबने बैठकर सलाह की कि हम इतने पाप किस तरह भोगेंगे? किसी समझदार आदमी ने उन्हें पाप छोड़ने के लिए कहा उन लोगों ने पाप करने छोड़ दिए। कुछ दिनों बाद गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने फिर वहाँ अपना सतसंग का दीवान लगाया कि मैंने आपको शिक्षा दी थी क्या आपने उस शिक्षा का लेखा-जोखा किया? उन्होंने कहा हाँ जी! एक दिन लेखा किया था कंकरो के बड़े-बड़े ढ़ेर लग गए। हम सबने पंचायत ने बैठकर यह फैसला किया कि हम पाप न करें फिर हमें लेखा नहीं देना पड़ेगा।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सिंह जी ने हमें और तरीके से समझा दिया, आपने हमें डायरी रखने के लिए कहा। हम बाहर पश्चिम में हर व्यक्ति को डायरी देते हैं। जिसमें वे रोजाना जो कुछ करते हैं उसे लिखते हैं लेकिन हमारे इलाके की ज्यादातर जनता अनपढ़ है अगर किसी को डायरी दे भी दें तो वह उस डायरी को नहीं पढ़ते। डायरी को ऊँची जगह पर रखकर घी की ज्योत जलाते हैं जिस तरह किसी देवता के आगे ज्योत जलाते हैं। जब उनसे

पूछते हैं कि डायरी रखता है तो वे कहते हैं कि हाँ जी! डायरी को बहुत संभालकर रखा हुआ है।

पश्चिम में हर व्यक्ति को डायरी दी जाती है अगर वह उस डायरी को न भी भरे तो उससे कहते हैं कि तू हमें खाली डायरी भेज दे। तब मन अंदर से शर्म भी करता है कि गुरुदेव ने मेरे खातिर इतना कष्ट उठाया है क्यों न मैं डायरी भरूं!

मैं जब सन्तबानी आश्रम अमेरिका गया तो वहाँ प्रेमियों ने यही सवाल किया कि महाराज कृपाल ने संगत को डायरी रखने के लिए दी, लोगों का जीवन बनाया। आप इस बारे में क्या कहेंगे? मैंने उन्हें प्यार से कहा कि मैं बहुत से प्रेमियों की डायरियां देखता हूँ लेकिन उनमें ज्यादातर वही गलतियां होती हैं जो वे रोज-रोज करते हैं। मैं सदा कहा करता हूँ कि जिंदगी की एक गलती ही पूरी जिंदगी को खुष्क कर देती है। वे कैसे हाथ हैं जो रोज-रोज फिर वही गलतियां लिखकर महीने के बाद डायरी भेज देते हैं। मैं यही कहता हूँ कि आज आपसे जो बुरा कर्म हो गया है वह कल न हो। दिल लगाकर भजन-अभ्यास करें।

सन्त हमें प्यार करते हैं। हमारा फर्ज बनता है कि हम उस प्यार को प्राप्त करें उस पर चलने की कोशिश करें इसमें हमारा भला है। सन्त यह नहीं चाहते कि ये आत्माएं यहाँ रूलती रहें। सन्तों का मिशन होता है कि हमारे जीवनकाल में बहुत से प्रेमी अभ्यास में तरक्की करें इनके अंदर शब्द की धारा प्रकट हो। टीचर वही कहलवा सकता है जिसके ज्यादा बच्चे पास हों। जिस टीचर के बच्चे पास न हो उसे हम टीचर कैसे कहेंगे? सन्तों का भी यही मिशन होता है कि मेरे जीवनकाल में मेरे बच्चे मेरी तालीम तक पहुँच जाएं लेकिन हम सुस्त हैं।

मैंने आपको बताया है कि हम **अनुशासन** में नहीं रहते, उपदेश सुनकर भूल जाते हैं। सच्चे पातशाह सावन-कृपाल ने हमें अपनी याद का मौका दिया है। उनकी याद में हम अपने घरों के बंधन ढ़ीले करके यहाँ आए हैं। अब हमारा फर्ज बनता है कि हमने जो कुछ यहाँ सुना है उस पर अमल करें अपना भजन-सिमरन करें और अपनी जिम्मेवारियों को निभाएं। एक-दूसरे से प्यार करते हुए इज्ज़त से संसार में रहें।

सतसंगी में से नाम की, प्यार की खुशबू आए ताकि हमारे पड़ोसियो को भी पता लगे कि यह फलाने सन्तों का सेवक है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो! गुरु नहीं उड़ते, गुरुओं को चेले उड़ाते हैं।'' गुरु हमेशा कहते हैं कि हमारी लाज हमारे चेलों के हाथ में है। सतपुरुष पवित्र होता है और वह चेलों से भी यही आशा रखता है कि ये जितने पवित्र होंगे इनमें जितना प्यार होगा उतनी ही मेरी शाबाश होगी। आम कहावत है:

माड़ा कुत्ता खसमें गाली।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे कि सच्चाई का बीज नाश नहीं होता। आप यह न सोचें कि संगत में कोई कमाई नहीं करता या **अनुशासन** में नहीं है। कमाई करने वाले और अनुशासन में रहने वाले बहुत हैं जो आपकी निगाह में भी होते हैं।

जब हमारे सच्चे पातशाह चोला उतारकर अपने घर सच्चखंड चले गए तो क्या-क्या कौतुक हुए? दुनिया कोर्ट में जाकर खड़ी हो गई जैसे उन्हें अक्ल नहीं थी कि वह मकान बनाकर छोड़ गए हैं? सबने यही कहा कि वे तो चले गए हैं। किसी ने कहा वे मर गए हैं अगर हम गुरु को जीवित समझें तो क्या हम आपस में लड़ सकते हैं? लेकिन उनमें से एक ने ऐसी सच्चाई पैदा की जिसने संसार में

बाजू खड़ी करके कहा, ''जो लोग कहते हैं कि गुरु मर गया है उन्हें कोर्ट में खड़ा करके उन पर मुकद्दमा चलाएं कि उन्होंने मरने वाला गुरु क्यों धारण किया?''

गुरु न जन्मता है न मरता है। शब्द-रूप ने जिस शरीर को भाग्य लगाने होते हैं वह उस शरीर में प्रकट हो जाता है। सन्त किसी को अपने शरीर के साथ नहीं जोड़ते, वे हमें 'शब्द' के साथ जोड़ते हैं। सन्त नहीं कहते कि हम आपके गुरु हैं। आपका गुरु 'शब्द-नाम' है। शब्द अविनाशी है, शब्द न जन्मता है न मरता है शब्द सदा ही कायम है अगर हम कमाई करें तो क्या गुमराह हो जाएंगे? कबीर साहब कहते हैं:

गुरु करया है देह का सतगुरु चीन्हा नाहे।
लख चौरासी धार में फिर फिर गोता खाहे।।

हमने अपनी देह से भी छुटकारा पाना है। हमने उस चीज़ को पकड़ना है जो सन्तों के अंदर काम कर रही है। गुरु देहधारी 'शब्द' होता है। वह 'शब्द' सतलोक से आकर सन्तों के अंदर प्रकट हो जाता है। परमात्मा प्यार है, सन्त प्यार रूप होते हैं।

सावन सतगुरु ने कहा अगर आपसे भजन नहीं होता, मन के साथ संघर्ष नहीं होता तो आप सन्तों के साथ प्यार ही कर लें! अगर सन्तों के साथ प्यार है तो अंत समय में वे ही आँखों के आगे आएंगे। अगर हम कोई चीज़ लहर के सुपुर्द कर दें तो वह समुद्र की तह में जाकर बैठ जाती है।

सन्त हमें वहीं लेकर जाएंगे जहाँ से वे आए हैं। सन्त 'शब्द' में से आते हैं और हमें 'शब्द' में ही लेकर समा जाते हैं। आपने जो यहाँ सुना है उस पर अमल करना है, भजन-सिमरन करना है और अपने जीवन को शान्तमयी ढ़ंग से बिताना है।***

6 अप्रैल 1987

धन्य अजायब

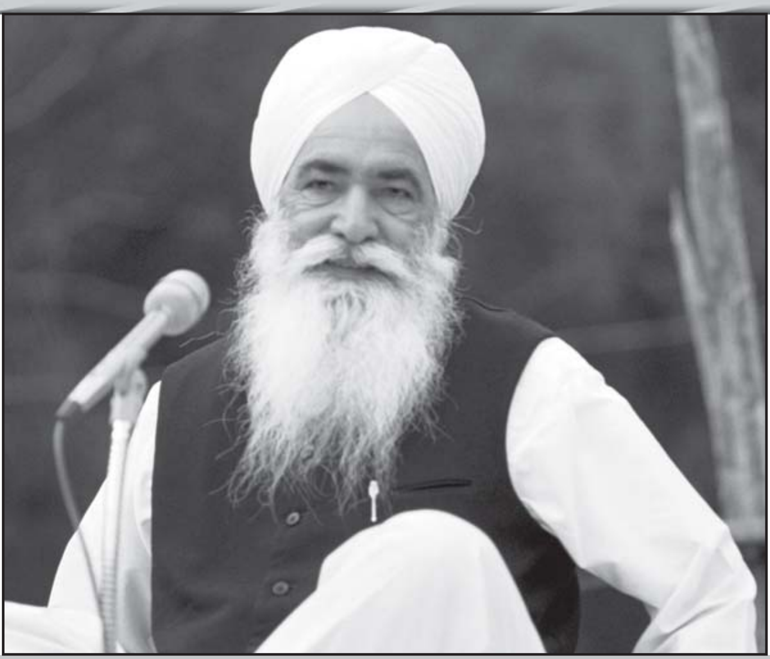

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

31 जुलाई 1 व 2 अगस्त 2015

7, 8, 9, 10 व 11 सितम्बर 2015

23, 24 व 25 अक्टूबर 2015

27, 28 व 29 नवम्बर 2015

25, 26 व 27 दिसम्बर 2015